उपनिषदों में ब्रह्म और आत्मा (अत्मन) की अवधारणा

उपनिषदों में ब्रह्म और आत्मा (आत्मन) की अवधारणा : उपनिषद भारतीय दर्शन और वेदांत के प्रमुख ग्रंथ हैं, जिनमें आत्मा (आत्मन) और ब्रह्म (सर्वोच्च वास्तविकता) के बारे में गहन विचार और दर्शन प्रस्तुत किए गए हैं। इन ग्रंथों में आत्मा और ब्रह्म की प्रकृति, उनका आपसी संबंध और मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग का वर्णन किया गया है। उपनिषदों का मुख्य उद्देश्य आत्म–ज्ञान और ब्रह्म के साथ एकत्व की प्राप्ति है।

☐ **ब्रह्म की अवधारणा :** उपनिषदों में ब्रह्म को सर्वोच्च सत्य, निराकार, अनंत और अपरिवर्त्तनीय माना गया है। ब्रह्म को "सच्चिदानंद" (सत्–चित्–आनंद) के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसका अर्थ है सत्य, चेतना और आनंद। ब्रह्म सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है, जो सभी चीजों का आधार और स्रोत है। यह अद्वितीय और एकमात्र वास्तविकता है, जिससे सृष्टि का उद्‌गम होता है और जिसमें वह विलीन होती है।

उपनिषदों में ब्रह्म की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

- **निराकार :** ब्रह्म का कोई रूप या आकार नहीं होता। यह निराकार और असीम है, जिसे किसी भी भौतिक वस्तु के रूप में नहीं देखा जा सकता।
- **अनंत :** ब्रह्म का कोई अंत नहीं है। यह काल और स्थान से परे है और सर्वव्यापी है।
- **अपरिवर्त्तनीय :** ब्रह्म में कोई परिवर्त्तन नहीं होता। यह सदैव स्थिर और अचल रहता है।
- **सर्वव्यापी :** ब्रह्म सभी जगह उपस्थित है। यह प्रत्येक वस्तु और प्राणी के भीतर और बाहर विद्यमान है।
- **सच्चिदानंद :** ब्रह्म सत्य, चेतना और आनंद का स्रोत है। यह परम शांति और आनंद की अवस्था है।

☐ **आत्मा (आत्मन) की अवधारणा :** उपनिषदों में आत्मा (आत्मन) को शुद्ध चेतना और ब्रह्म का अंश माना गया है। आत्मा प्रत्येक जीव में विद्यमान है और इसका स्वभाव शुद्ध, अविनाशी और अनंत है। आत्मा का मुख्य गुण यह है कि यह अज्ञान (अविद्या) के कारण अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचान पाती और माया (भ्रम) के कारण संसार में बंधन और दुख का अनुभव करती है।

उपनिषदों में आत्मा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

- **शुद्ध :** आत्मा शुद्ध और निष्कलंक है। इसमें कोई भी दोष या अपवित्रता नहीं होती।
- **अविनाशी :** आत्मा न तो जन्म लेती है और न ही मरती है। यह शाश्वत और अविनाशी है।
- **अनंत :** आत्मा असीम और अनंत है। यह काल और स्थान से परे है।
- **सर्वव्यापी :** आत्मा प्रत्येक जीव में विद्यमान है। यह सभी जगह उपस्थित है।
- **अज्ञान :** आत्मा अज्ञान (अविद्या) के कारण अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचान पाती और माया के कारण संसार में बंधन और दुख का अनुभव करती है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com